Prithviraj Chauhan

Prithviraj III (reign 1178–1192 CE), popularly known as Prithviraj Chauhan or Rai Pithora was an Indian king from the Chahamana (Chauhan) dynasty. He ruled Sapadalaksha, the traditional Chahamana territory, in present-day north-western India. He controlled much of the present-day Rajasthan, Haryana and Delhi; and some parts of Madhya Pradesh and Uttar Pradesh. His capital was located at Ajayameru (modern Ajmer), although the medieval folk legends describe him as the king of India's political Centre Delhi.

Prithviraj was born to the Chahamana king Someshvara and queen Karpuradevi. King Someshvara died in 1177 CE when Prithviraj was around 11 years old. Prithviraj, who was a minor at the time, ascended the throne with his mother as the regent. During his early years as the king, Prithviraj's mother managed the administration, assisted by a regency council. In 1175 CE, Muhammad of Ghori crossed the Indus River and captured Multan. In 1178 CE, he invaded Gujarat, which was ruled by the Chalukyas (Solankis). Over the next few years, Muhammad of Ghori consolidated his power in the territory to the west of the Chahamanas, conquering Peshawar, Sindh, and Punjab. He shifted his base from Ghazni to Punjab and made attempts to expand his empire eastwards, which brought him into conflict with Prithviraj Chauhan.

During 1190–1191 CE, Muhammad of Ghori invaded the Chahamana territory and captured Tabarhindah (identified with either Bhatinda or Sirhind). When Prithviraj learnt about this, he marched towards Tabarhindah with his feudatories, including Govindaraja of Delhi. Ghori's original plan was to return to his base after conquering Tabarhindah, but when he heard about Prithviraj's march, he decided to put up a fight. He set out with an army and encountered Prithviraj's forces at Tarain. In the ensuing battle, Prithviraj's army decisively defeated Muhammad of Ghori. Muhammad of Ghori was injured and forced to retreat. After defeating the army of Muhammmad of Ghori, Prithviraj Chauhan was asked to attack the retreating army but in the true Rajput tradition, Prithviraj refused to do so as it did not conform to the fair war rules.

Ghori returned to Ghazni and made preparations to avenge his defeat. He gathered a well-equipped army of 120,000 select Afghan, Tajik and Turkic horsemen over the next few months. He then marched towards the Chahamana kingdom via Multan and Lahore, aided by Vijayaraja of Jammu. Ghori formed four divisions, with 10,000 archers each. He kept the rest of his army in reserve. He ordered the four divisions to launch a surprise attack on the Chahamana camp, and then pretend a retreat. At dawn, the four divisions of the Ghori's army attacked the Chahamana camp, while Prithviraj was still asleep. After a brief fight, the attackers pretended to retreat in accordance with Ghori's strategy. Prithviraj was thus lured into chasing them, and by the afternoon, the Chahamana army was exhausted as a result of this pursuit. At this point, Muhammad led his reserve force and attacked the Chahamanas, decisively defeating them. Prithviraj Chauhan fought bravely in the battle but caught near the Sarasvati fort (modern Sirsa). Prithviraj Chauhan died in 1192, with his death a period of bravery, courage, patriotism, and principles came to an end.

Department of Posts is pleased to issue a set of four Commemorative Postage Stamps on Prithviraj Chauhan.

Credits:

Text : Based on the information available on internet

Stamp/ First Day Cover/ Brochure Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

पृथ्वीराज चौहान

PRITHVIRAJ CHAUHAN

विवरणिका BROCHURE

पृथ्वीराज चौहान

पृथ्वीराज ।।। (शासन 1178–1192), जिन्हें मुख्यतः पृथ्वीराज चौहान या राय पिथौरा के नाम से जाना जाता है, चहमान (चौहान) वंश के एक भारतीय राजा थे। उन्होंने वर्तमान उत्तर–पश्चिमी भारत में पारंपरिक चहमान क्षेत्र, सपादलक्ष पर शासन किया। उन्होंने आज के अधिकांश राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली को नियंत्रित किया और मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों पर भी शासन किया। उसकी राजधानी अजयमेरू (आधुनिक अजमेर) में स्थित थी, हालांकि मध्य युगीन लोककथाओं में उन्हें भारत के राजनीतिक केंद्र दिल्ली के राजा के रूप में भी वर्णित किया जाता था।

पृथ्वीराज का जन्म चहमान राजा सोमेश्वर और रानी कर्पूरादेवी के यहाँ हुआ था। 1177 में राजा सोमेश्वर की मृत्यु हो गई जब पृथ्वीराज की आयु केवल 11 वर्ष थी। पृथ्वीराज, जो उस समय एक नाबालिग थे, ने राजकुमार के रूप में अपनी मां के साथ सिंहासन पर राज किया। पृथ्वीराज के प्रारंभिक वर्षों के दौरान, राज प्रतिनिधि मण्डल की सहायता से उनकी मां ने प्रशासन चलाया। 1175 में, मोहम्मद गोरी ने सिंधु नदी पार कर मुल्तान पर कब्जा कर लिया। 1178 में, उसने गुजरात पर हमला किया, जहाँ चालुक्य (सोलंकी) द्वारा शासन किया जाता था। अगले कुछ वर्षों में, मोहम्मद गोरी ने अपनी सैन्य शक्ति चहमान राज्य के पश्चिम के क्षेत्रों में कब्जा करने मे लगा दी जिससे उसे पेशावर, सिंध और पंजाब पर विजय प्राप्त हुई। उसने अपना गढ़ गजनी से पंजाब में स्थानांतरित कर लिया और अपने साम्राज्य को पूर्व में विस्तारित करने लगा, फलस्वरूप पृथ्वीराज चौहान को युद्ध के मैदान में उतरना पड़ा।

1190–1191 के दौरान, मोहम्मद गोरी ने चहमान क्षेत्र पर हमला किया और ताबरीन्दाह (भटिंडा या सरहिंद) पर कब्जा कर लिया। जब पृथ्वीराज को इस बारे में पता चला, तो उन्होंने अपने सामंतों और दिल्ली के गोविन्दराज के साथ ताबरीन्दाह की ओर कूच किया। मोहम्मद गोरी की मूल योजना ताबरीन्दाह पर विजय प्राप्त करके वापस लौटने की थी, परन्तु जब उसने पृथ्वीराज के हमले के बारे में सुना, तो उसने युद्ध लड़ने का फैसला किया। उसने अपनी सेना को तैयार किया और तराईन में पृथ्वीराज चौहान की सेना का सामना किया। उस युद्ध में मोहम्मद गोरी की लज्जास्पद पराजय हुई और उसे पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा। मोहम्मद गोरी को पराजित करने के बाद जब पृथ्वीराज चौहान को पीछे हटने वाली सेना पर हमला करने के लिए कहा गया तो उन्होंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया क्योंकि राजपूत परंपरा के अनुसार यह युद्ध नियमों के अनुरूप नहीं था।

मोहम्मद गोरी गजनी लौट आया और अपनी हार का बदला लेने की तैयारी करने लगा। अगले कुछ महीनों में उसने 120,000 चुनिंदा अफगान, ताजिक और तुर्कीक घुड़सवारों की एक सुसज्जित सेना तैयार की। इसके बाद वह जम्मू के विजयराज के सहयोग से मुल्तान और लाहौर से चहमान साम्राज्य की ओर बढ़ा। मुहम्मद ने दस–दस हजार तीरंदाजों की चार अलग अलग सेनाएँ गठित की। कुछ शेष सेनाओं को उसने आरक्षित भी रखा। मोहम्मद गोरी ने अपने तीरंदाजों की चारों सेनाओं को आदे ा दिया कि वह सुबह चहमान शिविर पर एकाएक हमला करे, और फिर पीछे हटने का नाटक करे। सुबह में, गोरी की सेना के चार डिवीजनों ने चहमान शिविर पर हमला किया, जब पृथ्वीराज निद्रा में थे। एक संक्षिप्त लड़ाई के बाद, हमलावरों ने मुहम्मद की रणनीति के अनुसार पीछे हटने का नाटक किया। पृथ्वीराज और उनकी सेनाएँ मुहम्मद की सेना का पीछा करने लगी। दोपहर तक, इसके परिणामस्वरूप चहमान सेना बुरी तरह थक चुकी थी। यहाँ मुहम्मद ने अपनी आरक्षित सेना के साथ चहमानों पर हमला किया और निर्णायक रूप से उन्हें हराया। पृथ्वीराज चौहान भी बहादुरी से लड़े, लेकिन सरस्वती किले (आधुनिक सिरसा) के पास पकड़े गए। 1192 में पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु हुई। पृथ्वीराज चौहान का नाम वीरता, अदम्य साहस, दे प्रेम एवं सिद्धांतप्रियता की मिसाल के रूप में लिया जाता है ।

डाक विभाग पृथ्वीराज चौहान पर चार स्मारक डाक टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

पाठ : इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी पर आधारित

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण मुहर : श्रीमती अलका भार्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा (2), 1500 पैसा (2)
Denomination	:	500 p (2), 1500 p (2)
मुद्रित शीटलेट्स	:	500000
Sheetlets Printed	:	500000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00